

मेधिष्ठ वि. (तत्.) अत्यंत मेधावी।

मेध्य वि. (तत्.) 1. स्मृति या बुद्धि बढ़ाने वाला
2. पवित्र 3. यज्ञ के योय पुं. तत्. 1. जौ 2.
खदिर 3. बकरा।

मेध्या स्त्री. (तत्.) 1. केतकी 2. शंखष्पी 3. ब्राह्मी
3. मंडूकी आदि बुद्धिवर्धक बूटियाँ।

मेन पुं. (देश.) कामदेव मदन।

मेनका स्त्री. (तत्.) एक प्रसिद्ध अप्सरा जिसके
गर्भ से शकुंतला की उत्पत्ति हुई।

मेनकात्मजा स्त्री. (तत्.) शकुंतला, पार्वती।

मेना स्त्री. (तत्.) हिमवान की पत्नी, मेनका।

मेनाद पुं. (तत्.) मयूर, बिल्ली, बकरा।

मेना-धव पुं. (तत्.) हिमालय।

मेम स्त्री. (अं.) 'मेडम' का संक्षिप्त रूप 1. विवाहिता
अंग्रेज या यूरोपीय स्त्री 2. किसी स्त्री के लिए
आदर पूर्ण संबोधन 3. ताश का एक पत्ता जिसे
'बेगम' कहते हैं।

मेमन पुं. (फा.) गुजरात व महाराष्ट्र के व्यापारी
मुसलमान।

मेमना पुं. (अनु.) 1. भेड़ का बच्चा 2. घोड़े की
एक जाति।

मेमार पुं. (अर.) गृह निर्माण करने वाला शिल्पकार,
राज।

मेमारी स्त्री. (अर.) मेमार का काम करने का भाव,
शिल्पकारी।

मेमो पुं. (अं.) मेमोरेंडम का लघु रूप, ज्ञापन।

मेमोरियल पुं. (अं.) 1. स्मारक 2. यादगार 3.
प्रार्थनापत्र के साथ भेजा जाने वाला तथ्य
विवरण 4. आवेदन पत्र वि. स्मरण कराने वाला।

मेय वि. (तत्.) 1. जो नाप तौल के योग्य हो 2.
नापने योग्य 3. जो जाना जा सके या जो
जानने योग्य हो, ज्ञेय।

मेयना स.क्रि. (देश.) गूँथे हुए आटे, मैदे आदि में
मोयन डालना।

मेयर पुं. (अं.) किसी नगर निगम का निर्वाचित
अध्यक्ष, महापौर।

मेर पुं. (तद्.) 1. मेल 2. मेरापन, ममत्व 3. मेरु

मेरवन स्त्री. (देश.) 1. मिलाने की क्रिया या भाव
2. किसी में मिलाई हुई दूसरी चीज 3. मेल।

मेरवना स.क्रि. (देश.) मिलाना।

मेरा पुं. (सर्व.) 1. 'मैं' सर्वनाम का संबंधकारक
सार्वनामिक विशेषण रूप 2. स्वयं का जैसे- मेरा
गाँव, मेरा देश विलो. तेरा मुहा. मेरा तेरा करना-
अपने पराये का भेद करना।

मेराउ पुं. (देश.) भैंट, मिलाप।

मेराज स्त्री. (अर.) 1. ऊपर चढ़ने का साधन 2.
सीढ़ी 3. मुसलमानों का विश्वास है कि मुहम्मद
ने आसमान में जाकर ईश्वर का साक्षात्कार
किया।

मेराना स.क्रि. (देश.) मिलाना।

मेराव पुं. (देश.) 1. मिलाप 2. वैचारिक मेल।

मेरी वि.स्त्री (देश.) मेरा का स्त्रीलिंग रूप जो
सार्वनामिक विशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है
जैसे- मेरी इच्छा, मेरी श्रद्धा।

मेरु पुं. (तत्.) 1. सुमेरु पर्वत 2. जपमाला के
ऊपर का प्रधान या बड़ा मनका, जिससे जप
प्रारंभ करते हैं 3. करमाला में उँगली का पोर 4.
हार की मध्य मणि 5. उत्तरी ध्रुव।

मेरुआ पुं. (तत्.+तद्.) छोर का वह अंश जिसमें
रस्सियाँ बँधी होती हैं।

मेरुक पुं. (तत्.) 1. यज्ञ का धुआँ 2. धूप 3.
ईरान में स्थित एक देश।

मेरु-ज्योति स्त्री. (तत्.) उत्तरी व दक्षिणी ध्रुवों में
रात के समय बीच बीच में दृष्टिगोचर होने
वाली एक प्रकार की ज्योति जिससे दिन का सा
प्रकाश होता है।